

**सिकुड़न** स्त्री. (तद्.) 1. सिकुड़ा/सिमटा हुआ होने की अवस्था/भाव, आकुंचन, संकुचन 2. किसी पदार्थ के सिकुड़ने के कारण उसमें पड़ा बल, शिकन, सिलवट।

**सिकुड़ना/सिकुरना** अ.क्रि. (तद्.) 1. ठंड आदि के प्रभाव से या किसी अन्य कारण से किसी पदार्थ या शरीर के अंगों का विस्तार कुछ कम होना, संकुचन होना, आयामों में बढ़ने या फैलने के विपरीत होना, सिमटना। 2. वस्त्र आदि में शिकन/सिलवट पड़ना।

**सिकड़ी** स्त्री. (देश.) 1. शृंखला, जंजीर, साँकल 2. द्वार/किवाड़ की साँकल 3. कमर की करधनी 4. गले में पहनने का एक सोने/चाँदी का आभूषण, जंजीर, सिकरी।

**सिकुला** पुं. (तद्.) शंख के समान आकृति वाली छोटी सी सीपी जो पोखरों में पाई जाती है और जिसका कोई महत्व नहीं होता।

**सिकुहली/सिकुहली** स्त्री. (तद्.) मूँज, कास आदि की बनी हुई छोटी डलिया।

**सिकोड़ना/सिकोरना** स.क्रि. (तद्.) संकुचित करना, समेटना।

**सिकोरा** पुं. (देश.) 'सकोरा' या 'किसोरा' नामक मिट्टी का पात्र।

**सिकोली** स्त्री. (देश.) कास, मूँज, बेत या बाँस की कमाचियों की बनी हुई टोकड़ी।

**सिकोही** वि. (फा.) 1. आन-बानवाला 2. गर्वीला 3. बहादुर, वीर।

**सिक्क** पुं. (तत्.) बाँसुरी में लगाने की जीभी या उसका स्वर मधुर बनाने के लिए लगाया हुआ तार।

**सिक्कड़** पुं. (देश.) लोहे आदि की बड़ी और मोटी सिकड़ी।

**सिक्का** पुं. (अर.) 1. प्राचीन काल में, वह ठप्पा जिससे धातु-खंडों की प्रामाणिकता और शुद्धता सूचित करने के लिए विशिष्ट चिह्न अंकित किए जाते थे, मोहर करने वाला ठप्पा 2. आज-कल

निर्दिष्ट मूल्य का वह धातु खंड जो किसी राजकीय टकसाल में ढला या ठप्पे से दबाकर बनाया गया हो और पदार्थों के क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि के साधन के रूप में काम आता हो, मुद्रा, रुपया-पैसा 3. धाक, रोब।

**सिक्की** स्त्री. (अर.) 1. छोटा सिक्का 2. आठ आने वाला सिक्का, अठन्नी।

**सिक्के** क्रि.वि. (अर.) सिक्कों के रूप में अर्थात् नगद पूरा दाम देने पर टि. महाजनी बोल-चाल में इस शब्द का प्रयोग यह सूचित करने के लिए होता है जो कि दाम दिया जा लिया जाएगा उसमें किसी तरह की छूट या बट्टा अथवा दलाली आदि की रकम सम्मिलित नहीं होगी।

**सिक्ख** पुं. (तद्.) 1. शिष्य, चेला उदा. कबीर गुरु वैस बनारसी, सिक्ख, समुंदर पार-कबीर 2. गुरु नानक के पंथ का अनुयायी 3. इन अनुयायियों का वर्ग जिसने अब एक स्वतंत्र जाति का रूप धारण कर लिया है टि. ये अनुयायी केश, कंधा, कड़ा, कृपाण और कच्छा सदा धारण करते हैं।

**सिक्खी** स्त्री. (तद्.) सिक्ख धर्म-मत।

**सिक्क वि** (तत्.) 1. सींचा हुआ, सिंचित 2. भीगा हुआ, तर।

**सिक्थ** पुं. (तत्.) 1. भात 2. उबाले हुए चावलों या भात का कोई दाना, सीथ 3. भात का कौर या ग्रास 4. पिंड-दान के लिए बनाया हुआ भात का पिंड 5. मोतियों का ऐसा गुच्छा जो तौल में एक धरण या 32 रत्ती हो 6. मोम 7. नील।

**सिक्थ कर्म** पुं. (तत्.) मोम की मूर्तियाँ आदि बनाने का काम।

**सिखंड** पुं. (तद्.) शिखंड।

**सिखंडी** पुं. (तद्.) शिखंडी।

**सिख** स्त्री. (तद्.) 1. शिखा (चोटी 2. सीख (शिक्षा) पुं. सिक्ख।

**सिखन** पुं. (तद्.) सीखना उदा. नगर-रचना सिखन को-तुलसी।